भारत में खाद्य सुरक्षा

खाद्य सुरक्षा: अवलोकन

- **परिभाषा:** खाद्य सुरक्षा **हर समय** सभी लोगों के लिए भोजन की **उपलब्धता, पहुंच और सामर्थ्य** सुनिश्चित करती है।
- उत्पादन या वितरण में व्यवधान के दौरान **गरीब परिवार विशेष रूप से कमजोर होते हैं।**
- **सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस)** और सरकारी हस्तक्षेप खाद्य सुरक्षा बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

खाद्य सुरक्षा के आयाम

1. **प्राप्यता:**
   a. देश के भीतर खाद्य उत्पादन, आयात, और सरकारी अन्न भंडार में भंडारित।
2. **सुलभता:**
   a. भोजन शारीरिक रूप से **सभी लोगों की पहुंच के भीतर** होना चाहिए।
3. **सामर्थ्य:**
   a. लोगों के पास **आहार संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए सुरक्षित, पौष्टिक भोजन खरीदने के लिए** पर्याप्त आय होनी चाहिए।

मुख्य बिंदु: खाद्य सुरक्षा केवल तभी मौजूद है जब:

1. सभी के लिए पर्याप्त भोजन उपलब्ध है।
2. हर कोई स्वीकार्य गुणवत्ता का भोजन खरीद सकता है।
3. कोई भी बाधा भोजन तक पहुंच को नहीं रोकती है।

खाद्य सुरक्षा क्यों मायने रखती है

- गरीबी रेखा से नीचे के लोग अक्सर **खाद्य असुरक्षित** होते हैं, लेकिन यहां तक कि अमीर व्यक्ति **भी प्राकृतिक आपदाओं के दौरान प्रभावित हो सकते** हैं जैसे:
  - सूखा, बाढ़, भूकंप, सुनामी
  - व्यापक फसल विफलता
- आपदाओं के दौरान प्रभाव:

1. खाद्य उत्पादन में कमी → कमी
2. कीमतें बढ़ जाती हैं → गरीब भोजन का खर्च नहीं उठा सकते
3. लंबे समय तक कमी → भुखमरी → अकाल

BY: NK MISHRA

अकाल: विशेषताएँ

- **भुखमरी से बड़े पैमाने पर मौतें**
- दूषित पानी, सड़ते भोजन और कमजोर प्रतिरक्षा के कारण महामारी

ऐतिहासिक उदाहरण: 1943 का बंगाल अकाल

- मृत्यु: ~30 लाख लोग
- सबसे अधिक प्रभावित: कृषि मजदूर, मछुआरे, परिवहन श्रमिक, आकस्मिक मजदूर
- कारण: चावल की बढ़ती **कीमतें**, न केवल पूर्ण कमी

बंगाल में चावल उत्पादन (1938-1943):

सालों	उत्पादन (लाख टन)	आयात	निर्यात	कुल उपलब्धता
1938	85	–	–	85
1939	79	4	–	83
1940	82	3	–	85
1941	68	2	–	70
1942	93	–	1	92
1943	76	3	–	79

कथन:

- कुल उपलब्धता में कोई गंभीर कमी नहीं है; अकाल मुख्य रूप से **असमान पहुंच और आसमान छूती कीमतों के कारण हुआ।**

खाद्य सुरक्षा की अवधारणा का विकास

- ***1970 के दशक (यूएन, 1975):*** *हर समय भोजन की उपलब्धता* ***पर ध्यान केंद्रित किया।***
- ***अमर्त्य सेन:*** *उत्पादन, बाजार विनिमय और राज्य समर्थन के माध्यम से भोजन तक पहुंचने की क्षमता →* ***"पात्रता"*** *का विचार पेश किया।*
- ***1995 विश्व खाद्य शिखर सम्मेलन:*** *खाद्य सुरक्षा तब मौजूद होती है जब सभी लोगों के पास* ***सक्रिय और स्वस्थ जीवन*** *के लिए* ***पर्याप्त, सुरक्षित, पौष्टिक भोजन तक भौतिक और आर्थिक पहुंच*** *होती है।*
- ***भोजन तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए*** *गरीबी उन्मूलन आवश्यक है।*

भारत में वर्तमान खाद्य सुरक्षा स्थिति

- ***आजादी के बाद से बंगाल 1943 जैसा कोई अकाल*** *नहीं पड़ा है, लेकिन स्थानीय* ***अकाल जैसी स्थिति*** *और भुखमरी अभी भी होती है।*
- ***प्राकृतिक आपदाएँ और महामारीएँ****, उदाहरण के लिए,* ***COVID-19****, आवाजाही, उत्पादन और आय को प्रभावित करके खाद्य सुरक्षा को बाधित कर सकती हैं।*

खाद्य-असुरक्षित समूह

- ***ग्रामीण क्षेत्र:***
  - *भूमिहीन मजदूर, मौसमी कृषि श्रमिक (जैसे, रामू का परिवार)*
  - *पारंपरिक कारीगर, आकस्मिक श्रमिक, निराश्रित, भिखारी*
- ***शहरी क्षेत्र:***
  - *कम वेतन वाले आकस्मिक काम* ***पर निर्भर परिवार*** *(जैसे, अहमद, रिक्शा चालक)*
- ***सामाजिक रूप से वंचित समूह:***
  - *एससी, एसटी, कम आय वाले ओबीसी*
  - *गर्भवती महिलाएं, स्तनपान कराने वाली माताएं, 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चे*
- ***भौगोलिक रूप से कमजोर:***
  - *आपदा-प्रवण क्षेत्र, जनजातीय क्षेत्र, आर्थिक रूप से पिछड़े राज्य (जैसे, बिहार, झारखंड, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के कुछ हिस्से)*

भूख के प्रकार:

1. ***पुरानी भूख:*** *गरीबी और कुपोषण → लगातार अपर्याप्त आहार*
2. ***मौसमी भूख:*** *कृषि चक्र या आकस्मिक श्रम रोजगार से जुड़ा हुआ है*

रुझान: *कृषि और कल्याणकारी नीतियों के कारण 1983 के बाद से* ***मौसमी और पुरानी भूख दोनों में*** *गिरावट आई है।*

प्रकार	***1983***	***1993–94***	***1999–2000***
ग्रामीण मौसमी	*16.2%*	*4.2%*	*2.6%*
ग्रामीण क्रोनिक	*2.3%*	*0.9%*	*0.7%*
शहरी मौसमी	*5.6%*	*1.1%*	*0.6%*
शहरी क्रोनिक	*0.8%*	*0.5%*	*0.3%*

BY : NK MISHRA

भारत में खाद्य सुरक्षा उपाय

1. खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता

- *स्वतंत्रता के बाद की नीति का उद्देश्य* ***आत्मनिर्भरता है।***
- ***हरित क्रांति (1960-70 का दशक):*** *गेहूं और चावल* ***की उच्च उपज वाली किस्में****, शुरू में पंजाब और हरियाणा में।*
- ***उत्पादन के रुझान:***
  - *2020–21: 310 मीट्रिक टन; 2021-22: 315 मीट्रिक टन खाद्यान्न*
  - *प्रमुख गेहूं उत्पादक: यूपी (36 मीट्रिक टन), मध्य प्रदेश (18 मीट्रिक टन)*
  - *प्रमुख चावल उत्पादक: पश्चिम बंगाल (17 मीट्रिक टन), उत्तर प्रदेश (16 मीट्रिक टन)*

2. न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी)

- *किसानों ने* ***फसलों के लिए एमएसपी की गारंटी*** *दी, उत्पादन को प्रोत्साहित किया।*
- *आय सुरक्षा* ***सुनिश्चित करता है*** *और खाद्यान्न आपूर्ति को स्थिर करता है।*

3. बफर स्टॉक

- *(ख) भारतीय खाद्य निगम द्वारा* ***खरीदे जाने वाले खाद्यान्नों की*** *कमी के दौरान उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए खाद्यान्नों की खरीद की जाती है।*

- *अन्न भंडार में संग्रहीत; बाद में पीडीएस के माध्यम से वितरित किया गया।*
- ***लक्ष्य:***
    - *आपूर्ति की कमी वाले क्षेत्र*
    - *गरीबों को उच्च बाजार कीमतों से बचाएं*
    - *आपदाओं में भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित करें*

सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस)

- ***पूरे भारत में*** *~5.5 लाख राशन की दुकानों का नेटवर्क*
- *बाजार दर से कम कीमतों पर* ***गेहूं, चावल, चीनी, मिट्टी के तेल की*** *आपूर्ति की जाती है*
- *राशन कार्ड:*

1. ***अंत्योदय (गरीबों में सबसे गरीब)***
2. ***बीपीएल (गरीबी रेखा से नीचे)***
3. ***एपीएल (गरीबी रेखा से ऊपर)***

विकास:

- *1992: दूरस्थ/ पिछड़े क्षेत्रों → पीडीएस (आरपीडीएस) को संशोधित किया गया।*
- *1997: लक्षित पीडीएस (टीपीडीएस) → गरीब परिवारों*
- *2000:* ***अंत्योदय अन्न योजना (एएवाई)*** *सबसे गरीब परिवारों →*
- *2002:* ***अन्नपूर्णा योजना (एपीएस)*** *गरीब वरिष्ठ नागरिकों →*
- *2013:* ***राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए)*** *75% ग्रामीण, 50% शहरी आबादी →*

चुनौतियों:

- *राशन की दुकानों पर कदाचार (खुले बाजार में डायवर्जन, खराब गुणवत्ता वाले अनाज)*
- *भारतीय खाद्य निगम के गोदामों में बर्बादी → अधिक आपूर्ति, उच्च भंडारण लागत*
- *एमएसपी में गेहूं और चावल → सांद्रता में वृद्धि, मोटे अनाज की उपेक्षा*

सहकारी समितियों की भूमिका

- *सहकारी समितियां गरीबों को* ***किफायती भोजन*** *उपलब्ध कराने में मदद करती हैं:*
    - ***तमिलनाडु:*** *94% उचित मूल्य की दुकानें सहकारी समितियों द्वारा संचालित*
    - ***दिल्ली:*** *मदर डेयरी नियंत्रित दरों पर दूध/ सब्जियों की आपूर्ति करती है*
    - ***गुजरात:*** *अमूल → श्वेत क्रांति*
    - ***महाराष्ट्र:*** *खाद्य सुरक्षा के लिए एनजीओ (एडीएस) द्वारा अनाज बैंक*

1. भारत में खाद्य सुरक्षा कैसे सुनिश्चित की जाती है?

भारत में खाद्य सुरक्षा निम्नलिखित के संयोजन के माध्यम से सुनिश्चित की जाती है:

- ***खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता*** *(उच्च उपज वाले गेहूं और चावल → हरित क्रांति)*
- ***कमी को पूरा करने के लिए सरकार द्वारा बनाए गए*** *बफर स्टॉक*
- ***सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस)*** *गरीब परिवारों को रियायती दरों पर आवश्यक खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराएगा*
- ***खाद्य आधारित कल्याणकारी योजनाएं*** *जैसे अंत्योदय अन्न योजना, मध्याह्न भोजन योजना, आईसीडीएस आदि को बढ़ावा दिया जा रहा है।*

---

2. खाद्य असुरक्षा के लिए कौन से लोग अधिक प्रवण हैं?

- *भूमिहीन मजदूर और छोटे/ सीमांत किसान*
- *मौसमी कृषि श्रमिक और दिहाड़ी मजदूर*
- *शहरी गरीब कम वेतन वाली नौकरियों पर निर्भर हैं (रिक्शा चालक, घरेलू सहायक)*
- *सामाजिक रूप से वंचित समूह: एससी, एसटी, कम आय वाले ओबीसी*
- *गर्भवती/ स्तनपान कराने वाली महिलाएं और 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चे*
- *प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित लोग और काम के लिए पलायन करने वाले लोग*

---

3. भारत में कौन से राज्य अधिक खाद्य असुरक्षित हैं?

- *बिहार*
- *झारखंड*
- *ओडिशा*
- *पश्चिम बंगाल*

BY UK MISHRA

- *छत्तीसगढ़*
- *उत्तर प्रदेश के पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी भाग*
- *मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के कुछ हिस्से*

ये उच्च गरीबी, आदिवासी आबादी या आपदाओं के प्रति संवेदनशील क्षेत्र हैं।

---

4. क्या आप मानते हैं कि हरित क्रांति ने भारत को खाद्यान्न में आत्मनिर्भर बना दिया है? कैसा?

हाँ। हरित क्रांति ने ***गेहूं और चावल की उच्च उपज वाली किस्में,*** *आधुनिक सिंचाई और बेहतर उर्वरकों की शुरुआत की। इससे उत्पादन में काफी वृद्धि हुई, खासकर पंजाब, हरियाणा और यूपी में। परिणामस्वरूप, भारत खाद्यान्न* ***में आत्मनिर्भर बन गया****, अकाल से बचा और घरेलू मांग को पूरा किया।*

---

5. भारत में लोगों का एक वर्ग अभी भी बिना भोजन के है। समझाना?

भले ही भारत पर्याप्त भोजन का उत्पादन करता है, लेकिन ***खाद्य असुरक्षा*** *निम्न कारणों से बनी हुई है:*

- *गरीबी → भोजन खरीदने में असमर्थता*
- *मौसमी बेरोजगारी → ग्रामीण श्रमिकों को ऑफ-सीजन के दौरान भूख का सामना करना पड़ता है*
- *कुछ राशन की दुकानों → अकुशल वितरण ठीक से अनाज उपलब्ध कराने में विफल*
- *प्राकृतिक आपदाएँ या महामारियाँ आपूर्ति और पहुंच को बाधित → हैं*

---

6. जब कोई आपदा या आपदा आती है तो भोजन की आपूर्ति का क्या होता है?

- *भोजन की कमी → स्थानीय उत्पादन नष्ट हो सकता है*
- *माइग्रेशन तब होता है जब लोग काम खोजने के लिए आगे बढ़ते हैं*
- *सरकार ने बफर स्टॉक* ***जारी करके*** *और पीडीएस या राहत शिविरों के माध्यम से भोजन वितरित करके हस्तक्षेप किया*
- *हस्तक्षेप में देरी होने पर अल्पकालिक भूख और कुपोषण हो सकता है*

---

7. मौसमी भूख और पुरानी भूख के बीच अंतर करें

लक्षण	***मौसमी भूख***	***पुरानी भूख***
कारण	*कृषि चक्र या मौसमी कार्य से जुड़ा हुआ है*	*लगातार कम आय या अपर्याप्त आहार*
मियाद	*अस्थायी, दुबले मौसम या ऑफ-सीजन के दौरान*	*साल भर लगातार*
उदाहरण	*खेतिहर मजदूर 4 महीने से बेरोजगार*	*रोजाना दो वक्त की रोटी का खर्च उठाने में असमर्थ परिवार*
सामान	*अल्पकालिक भूख*	*कुपोषण, गरीबी, अवरुद्ध विकास*

---

8. हमारी सरकार ने गरीबों को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के लिए क्या किया है? किन्हीं दो योजनाओं की चर्चा कीजिए।

- ***सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस):*** *राशन की दुकानों के माध्यम से गरीब परिवारों को रियायती खाद्यान्न (गेहूं, चावल, चीनी) प्रदान करती है।*
- ***अंत्योदय अन्न योजना (एएवाई):*** *सबसे गरीब परिवारों को अत्यधिक रियायती दरों पर प्रति माह 35 किलोग्राम खाद्यान्न प्रदान करता है।*
- *अन्य स्कीमों में मध्याह्न भोजन, आईसीडीएस, काम के बदले भोजन, रोजगार गारंटी योजनाएं आदि शामिल हैं।*

---

9. सरकार द्वारा बफर स्टॉक क्यों बनाया जाता है?

- *कमी या आपदाओं* ***के दौरान भोजन की उपलब्धता*** *सुनिश्चित करने के लिए*
- *देश के* ***घाटे वाले क्षेत्रों*** *में भोजन की आपूर्ति करना*
- *कीमतों को स्थिर* ***करने और गरीबों के लिए भोजन को किफायती बनाने*** *के लिए*

---

10. इस पर नोट्स लिखें:

A न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी):

कुछ फसलों के लिए सरकार द्वारा किसानों को पूर्व निर्धारित मूल्य का भुगतान किया जाता है
आय सुरक्षा सुनिश्चित करता है और आवश्यक खाद्यान्न के उत्पादन को प्रोत्साहित करता है

(बी) बफर स्टॉक:

सरकार द्वारा खरीदे और संग्रहीत खाद्यान्न (गेहूं और चावल)

घाटे वाले क्षेत्रों में या आपदाओं के दौरान वितरित करने के लिए उपयोग किया जाता है

निर्गम मूल्य:

जिस मूल्य पर पीडीएस के माध्यम से उपभोक्ताओं को खाद्यान्न बेचा जाता है

आमतौर पर गरीब परिवारों को लाभ पहुंचाने के लिए बाजार मूल्य से कम

उचित दर की दुकानें (राशन की दुकानें):

आवश्यक खाद्य पदार्थों का वितरण करने वाली सरकार द्वारा विनियमित दुकानें

गरीबी रेखा से नीचे और गरीबी रेखा से ऊपर के परिवारों को रियायती कीमतों पर अनाज, चीनी और मिट्टी के तेल की आपूर्ति करता है

---

11. राशन की दुकानों के कामकाज में क्या समस्याएं हैं?

- *खाद्यान्नों का खुले बाजार में उपयोग*
- *आपूर्ति किए गए अनाज की खराब गुणवत्ता*
- *दुकानों का अनियमित रूप से खुलना*
- *दुकानों में बिना बिके स्टॉक का जमा होना बर्बादी→*

---

12. भोजन और संबंधित वस्तुओं को उपलब्ध कराने में सहकारी समितियों की भूमिका पर एक टिप्पणी लिखें

- *सहकारी समितियों ने **सस्ती दरों पर भोजन और आवश्यक वस्तुओं को बेचने में मदद की***
- *उदाहरण:*
  - ***तमिलनाडु:** 94% उचित मूल्य की दुकानें सहकारी समितियों द्वारा संचालित*
  - ***दिल्ली:** मदर डेयरी को दूध और सब्जियों को नियंत्रित दरों पर→*
  - ***गुजरात:** अमूल→ दूध और दूध उत्पाद (श्वेत क्रांति)*
- *गैर-सरकारी संगठन और सहकारी समितियां **खाद्य-असुरक्षित परिवारों की मदद के लिए** अनाज बैंक भी चलाती हैं*

BY: NK MISHRA